11

पारम्परिक ज्ञान प्रणाली और पेटेंटिंग
(नैनीताल के मोमबत्ती कुटीर उद्योग के सन्दर्भ में)

डॉ. रूमा साह
असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
स.भ.सि.रा.स्ना. महाविद्यालय, रूद्रपुर, उ.सि.न.

पारम्परिक ज्ञान का अर्थ है जानकारी तथा कौशल (Skill)। ये ज्ञान ग्रन्थों, पांडुलिपियों, संगीत, नृत्य, डिजाइन, हस्तकला, विभिन्न प्रथाओं के रूप में प्राप्त होता पीढी दर पीढी हस्तान्तरित होता लोगों की आजीविका का साधन होता है। यहीं नहीं ये हमारी लोक–कलाओं व संस्कृति की विशेष पहचान भी है। इसी संस्कृति व हस्तकौशल को दर्शाता हिमालय की गोद में स्थित पर्वतीय राज्य देवभूमि उत्तराखण्ड़ राज्य का जनपद नैनीताल है। देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ नैनीताल अपनी रमणीयता, मन्दिरों, पयर्टन अपने–झील के सौन्दर्य, स्वास्थ्य–वर्धक जलवायु, अनेकानेक दर्शनीय स्थलों तथा मैदानी क्षेत्रों से निकटता के कारण अत्यन्त लोकप्रिय है। ब्रिटिश शासकों के लिये नैनीताल का इग्लैंण्ड जैसा होना ही वो प्रमुख कारण रहा जिसके कारण उन्होंने इसका चयन मनोरंजक व स्वास्थ्य वर्धक स्थान हेतु किया। व्यापार का सफल व सजीव केन्द्र नैनीताल अपने मुख्य बाजार, विशाल बंगले, विश्राम गृह, कई दर्शनीय पयर्टक स्थल, मन्दिर, सचिवालय, कोर्ट, स्कूल तथा अन्य प्रशासनिक इकाईयों हेतु सुप्रसिद्ध है। चहुँ ओर से झीलों से आच्छादित होने के कारण इसे झीलों का शहर भी कहा जाता है। ''नैनीताल का आरम्भिक सन्दर्भ स्कन्द पुराण के मानस खण्ड में त्रिऋषि सरोवर या तीन ऋषियों अत्रि, अगस्त्य और पुलाहा की झील के रूप में सन्दर्भित होता है। यह मान्यता है कि यह तीन ऋषि कैलाश मानसरोवर की तीर्थ यात्रा के दौरान यहाँ पहुँचे है। अपनी प्यास को बुझाने के लियें यहाँ पानी न मिलने के कारण उन्होंने

एक विशाल गढ्ढा खोदा और अपनी दैवीय शक्तियों से उस गढ्ढे में मानसरोवर झील का जल प्रवाहित किया आदि भारतीयों का विश्वास था कि नैनीताल झील यानि छोटे मानसरोवर में एक डुबकी लगाने से पवित्र मानसरोवर झील के समकक्ष ही पुण्य प्राप्त होता है।"[१]

कुटीर उद्योगों के रूप में यहाँ के नागरिको को रोजगार भी मिला है। स्थानीय लोगों द्वारा निर्मित घर की सजावट की वस्तुएँ, चीड़ के पेड़ के सूखे फल से निर्मित हाथों से बनी सुन्दर कलाकृतियाँ, बुके, तिब्बती बैग, गर्म ऊनी स्कार्फ, शॉल, मोजे, बच्चों के खेल खिलौने तथा खाद्य वस्तुओं में यहाँ की नमकीन व जलेबी विशेषकर प्रसिद्ध है। इनके अतिरिक्त जैकेट, स्वेटर, हुडी, पौंचू, छाताएँ, डिजाइनर पर्स आदि के साथ अन्य कई आकर्शक वस्तुएँ नैनीताल की प्रसिद्ध सौगातों में शामिल है। जिन्हें देश–विदेश से यहाँ पर भ्रमण हेतु आए पयर्टक अपने साथ ले जाना नहीं भूलते चाहे स्वयं के लिए या फिर उपहार देने हेतु। उपर्युक्त आकर्षक उपहारों के अतिरिक्त एक उपहार ऐसा है। जिससे कि देश–विदेश सभी रोशन हो रहे है। वो है यहाँ की खूबसूरत मोमबत्तियाँ इन मोमबत्तियों की बढ़ती माँग से यहाँ के काराबोरी काफी प्रसन्न व सन्तुष्ट नजर आते है। यही नहीं यहाँ का टैग मिलने के बाद कारोबारियों ने इस क्षेत्र में दिन–दूनी रात–चौगुनी वृद्धि की है। यहाँ ये कारोबार लघु उद्योग के रूप में पनप रहा है।

हालाँकि इमरजेन्सी लाइट, इन्वरटर, विद्युत चार्जर आदि इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों के चलते इसका कारोबार कुछ हल्का भी मालूम होता है। लेकिन फिर भी आकर्षक, मनमोहक विभिन्न आकृतियों–खुशबु से निर्मित ये मोमबत्तियाँ अपनी अलग ही छटा बिखेरती दीपावली, क्रिसमस, बर्थ–डे पार्टी, विभिन्न तीज–त्यौहारों व विशेष अवसरों आदि में चार–चाँद लगा देती है। विशेषकर उपहार स्वरूप देने के लिये ये सुन्दर तथा बजट के अन्दर है और इन्हें जलाना ही आवश्यक नहीं है अपितु सजावट के रूप में ये हमारें घरों की शोभा भी बढ़ाती है। नैनीताल में कुटीर उद्योग के रूप में पनप रहे इस कारोबार में वर्षों से घर–घर की महिलाएँ मशीनरी के अभाव में हाथों से विभिन्न प्रकार की रंग–बिरंगी, खुशबुदार, डिजाइनर मोमबत्तियों बनाकर अपने व अपने परिवार का पालन–पोषण कर रही है। छोटे व्यवसायों में यह एक ऐसा व्यवसाय है। जिसे कम लागत से, कम उपकरणों द्वारा घर पर भी शुरू किया जा सकता है। हालांकि सैर–सपाटे, Tourist Place के अतिरिक्त नैनीताल मोमबत्ती के क्षेत्र में अपनी पहचान बना चुका है। यहाँ मोबत्तियों के ही आइटम का प्रत्येक वर्ष लाखों में व्यापार, कारोबार, निर्यात होता है। "इस शब्द की व्युत्पत्ति लेटिन भाषा व्युत्पत्ति लेटिन भाशा में केंडेला शब्द (जिसका अर्थ रोशनी से है।) से हुई। जिसका उपयोग अंग्रेजी और संगलो नॉर्मन भाषा में केंडल के नाम से किया जाता है।"[२]

मोमबत्ती बनाने हेतु व्यवस्थाएँ–

१. उचित आकार का भवन
२. फर्नीचर
३. मशीनरी व उपकरण
४. कुशल कारीगर
५. उचित तापमान
६. भट्टी व लोहे के स्टैण्ड

सामग्री–

१. अच्छी क्वालिटी का मोम
२. मोमबत्तियाँ बनाने हेतु विभिन्न आकार प्रकार के साँचे
३. ट्रे भगोने व आवश्यकतानुसार अन्य बर्तन
४. विभिन्न रंगों के धागे, चमचम, पेन्ट, रंग, पन्नी, पेपर, रिबिन व अन्य सजावरी सामान
५. पैंकिग मैटेरियल में विभिन्न आकार के (मोटे–पतले) रंगीन पट्टे के बॉक्स
६. सुगंधित तेल, परफ्यूम, बत्तियाँ (मोटी, पतली)।

मोमबत्ती बनाने का तरीका–

सर्वप्रथम उत्तम क्वालिटी के मोम की आवश्यकता होती है। मोम को गर्म कर पिघलाया जाता है और उसमें आवश्यकतानुसार चमकीले, सुनहरे रंगों को मिलाकर विभिन्न आकार के ग्लास या साँचों में गर्म–गर्म डाला जाता है जो कि साँचों की (गोल, चौकोर, आयताकार, लम्बी, फल–फूल, पेड़–पौधे,

जीव–जन्तु) आकृतिनुसार बन कर तैयार होती है। सुगंधित मोमबत्ती बनाने हेतु मनपसंद खुशबुदार तेल को मोम में अच्छे प्रकार से मिलाकर गर्मी से बचाव वाले दस्ताने पहनकर उसे साँचे में डालकर ठोस होने तक उसमें रहने दे। फिर ठंडा होने के बाद मोमबत्ती को साँचे से बाहर निकाल लिया जाता है। वो साँचे की आकृतिनुसार बन कर तैयार हो जाती है। उसके पश्चात पैकिंग कार्य होता है। जिसमें विभिन्न रंगों की पन्नियों, सुन्दर रीबिन–डोरी आदि का प्रयोग कर मोमबत्ती की खूबसूरती में चार–चाँद लग जाते है। लेकिन कुछ मोमबत्तियाँ महिलाएँ केवल अपने हाथों से बनाती है जिनमें किसी भी प्रकार की मशीनरी का प्रयोग नहीं होता है।

मोम के प्रकार–मोम कई प्रकार का होता है जिनमें से कुछ प्रकार निम्नवत् है।

१. **पैराफिन मोम**–इसकी सुगंध तेज व बेहतरीन होती है इस कारण कई ब्रांड अपनी मोमबत्तियों में इसका प्रयोग करते है।

२. **प्राकृतिक मोम**–जीवों तथा पौधों इत्यादि से प्राप्त प्राकृतिक मोम मधु–मक्खियों की पेट की एक ग्रंन्थि से उत्पन्न होता है।

३. **सिन्थेटिक मोम**– कृत्रिम रूप से बनाया गया ये मोम मोमबत्ती के क्षेत्र में अपनी एक पहचान बना चुका है। नैनीताल में मोमबत्ती आइटम का प्रत्येक वर्ष लाखों में व्यापार, कारोबार, निर्यात होता है।

४. **सोया मोम**– सोयाबीन से बना ये मोम साफ–सुथरे तरीके से जलते हुए बहुत कम कालिख पैदा करता लम्बे समय तक जलता है।

५. **नारियल मोम**– यह मोम धीरे–धीरे जलते हुए बढ़िया खुशबु देता है।

६. **पॉम वैक्स**– साफ–सुथरे तरीके से धीरे–धीरे जलने वाले सख्त मोम से सजावटी मोमबत्तियाँ बनकर तैयार होती है।

७. **जैल वैक्स**– इस मोम के द्वारा पारदर्शी मोमबत्तियाँ बनती है। इसमें बनते समय मोम के द्वारा पारदर्शी मोमबत्तियाँ बनती है। इसमें बनते समय मोम में डिजाइनर वस्तु जैसे चमचम, रंग– बिरंगी विभिन्न आकार की छोटी–छोटी पत्तियाँ, बूटे इत्यादि सजावटी सामान आदि डाले जाते है जैल मोम होने के कारण वो अन्दर दिखायी देते, झिलमिलाते बहुत ही खूबसूरत लगते है।

८. **मिश्रित मोम**– कई प्रकार के मोम को मिलाकर अधिक तेज खुशबु व देर तक जलती इससे निर्मित मोमबत्तियाँ अद्वितीय लगती है।

साक्षात्कार–

''नैनीताल की प्रसिद्ध मोमबत्ती कारोबारी मलहोत्रा कैंडिल्स की ऑनर श्रीमती वर्शा मलहोत्रा से दिनांक ३०/०६/२०२४ को पूर्वाहन् में लिये साक्षात्कार में उन्होंने मोमबत्तियों के निर्माण से सम्बन्धित जानकारी साझा करते हुए बताया कि हमारी ये दुकान लगभग ५० साल पुरानी है। १९७१–७२ से ये दुकान चल रही है। पहले मोमबत्ती निर्माण का ये कार्य छोटी दुकान में छोटे पैमाने पर होता था। पर अब ये व्यापार बड़े पैमाने पर होता है। उन्होंने मोमबत्ती बनाने की प्रक्रिया बताते हुए कहा कि इसके लियें दिल्ली से मोम आयात किया जाता है। सर्वप्रथम मोम को पिघलाकर उसमें रंग–परफ्यूम मिलाकर गर्म–गर्म खाँचों में डाला जाता है। सजावट के आधार पर फूल–पत्तियों को सुखाकर चाकू से गर्म मोम में चिपकाया जाता है। फिर ठंडा किया जाता है। मोमबत्ती अपनी मनचाही आकशतिनुसार बन कर तैयार हो जाती है। इन्होंने अपनी चर्चा में पैराफिन वैक्स तथा बी–वैक्स के विशय में बताया।

१. पैराफिन वैक्स– ये पेट्रोलियम से निकलता है तथा कार्बन व हाइड्रोजन का कम्पाउन्ड होता है।

२. बी वैक्स – Honey wax मधुमक्खियों द्वारा तैयार किया जाता है। ये कीमती होता है।

इन्होंने अपनी दुकान में उपलब्ध कई प्रकार की मोमबत्तियों को दिखाते हुए उनके विशय में बताया जो निम्नांकित है।

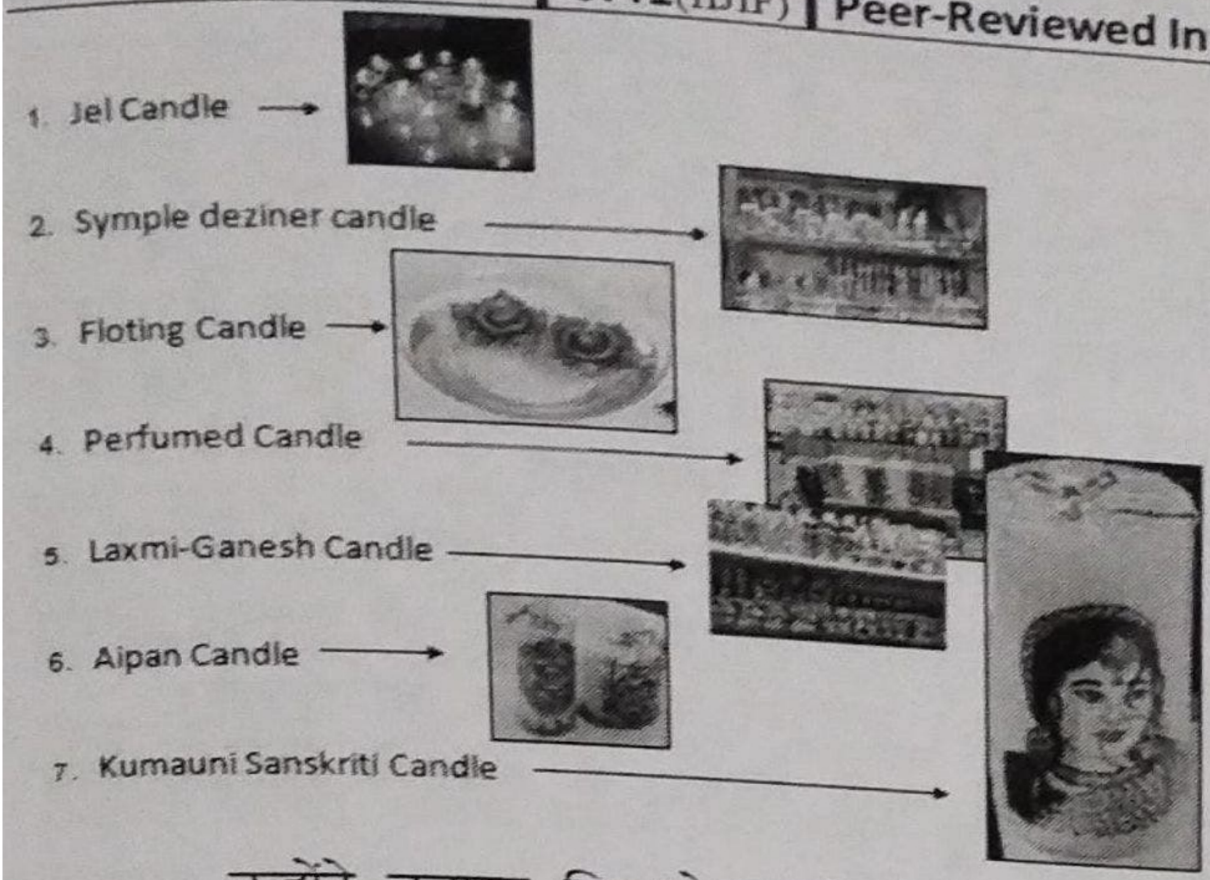

उन्होंने बताया कि मोमबत्ती (Candels) को जलाने के बाद उसमें से कार्बनडॉइऑक्साइड CO_2 तथा जल H_2O निकलता है।''[३]

मोमबत्तियाँ न केवल हमारे तीज–त्यौहारों, पार्टियों (जन्मदिन, सालगिरह) आदि को रोशन कर कमरों, मन्दिरों, पार्टी लॉन–हॉल आदि की खूबसूरती बड़ाती है। अपितु भारतीय सभ्यता व संस्कृति की अनूठी शैली व कलाओं को दर्शाती भारतीय परम्परा को जीवन्त बनाए है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. नैसर्गिक नैनीताल, प्रकाशक: नैनीताल पुलिस विभाग, प्रकाशन: दीक्षा क्रिऐशन, बरेली सं०: प्र० प्रकाशित : २००८, पृ०सं०: १ व २

२. मोमबत्ती–विकिपीडिया https://hi.wikipedia.org

३. साक्षात्कार–दिनांक ३०/०६/२०२४ मल्होत्रा कैंडल्स (नैनीताल)